147
947
H
P
MICRO FILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1303/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 947

891.431 V59 P

॥ ओं ॥

वन्देमातरम्

पाप का घड़ा

लेखक व प्रकाशक-

ज्ञानसिंह वर्म्मा हरीपुर निवासी।

मिलने का पता-नवलकिशोर गुप्त मियांगंज
अलीगढ़ सिटी।

प्रथम वार २०००	सन् १९२३ ई०	मूल्य)॥ १।) सैकड़ा

प्रिंटर-पं० जगदीशप्रसाद शर्म्मा "जगदीश प्रेस", अलीगढ़।

32
947
Pap Ka ghara in Hindi
Recd. on 22.8.1923 Govt of U.P.
By Gyan Singh Verma

पाप का घड़ा

एक साहब कह रहा था यूं खड़ा खड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥
आये थे इन्डिया में हम रुजगार के लिये ।
निज देश के तरक्कीए बाज़ार के लिये ॥
ईसाई धर्म के यहां प्रचार के लिये ।
मालूम करने देश के व्यवहार के लिये ॥
बिल्ली के भागों टूट मगर छींका यां पड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ १ ॥

आकर के देखा हिन्द में है खूब ही आराम ।
होती हैं यहां ज़िन्दगी की वस्तुएं तमाम ॥
सीधे हैं बहुत देश भर के खास और आम ।
जड़ जम गई यहां पै तो बन जायगा बस काम ॥
यह सोच समझ घुस पड़े हम करके दिल कड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ २ ॥

यहां पर तो ज्यादा सीधेपन की टेव थी बुरी ।
हिन्दू मुसल्मां हांकते थे बातें बेसुरी ॥
आपस के भेद भाव की जमात थी जुरी ।
पेटों में घुस गये हम बन शहद की छुरी ॥
हमने भी इन के बीच में दी टांग फिर अड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ ३ ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 947
Date 27.12.71
GOVT. OF INDIA

हम एक को उभारते दूजे को दबाते ।
भेद नीति से थे काम अपना बनाते ॥
आते थे जो इन्साफ को बस बचने न पाते ।
बन्दर की तरह उनको नोंच नोंच कर खाते ॥
आपस के मेल जोल को हमने दिया उड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ ४ ॥

हम चाहते जिसे थे देते जेल बेखता ।
लेते थे जिसको चाहते हम खूब ही सता ॥
करता था उज्र कोई बताते उसे धता ।
इतने पै भी ये हमको समझते थे देवता ॥
इन पर किया था हमने अन्याय जो बड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ ५ ॥

क़ानून हमने ऐसे बनाये हैं पेचदार ।
जिनसे न बचे कोई भी कैसा ही होशियार ॥
इन में तमाम उम्र बस होती रहे तकरार ।
नहीं चक्र से निकलने का कोई करे विचार ॥
अपना बनाया काम था इन को लड़ा लड़ा ।
पर भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ ६ ॥

नहरें व रेल तार बनाये जो यहां पर ।
नल भी लगा दिये हैं हम रहते हैं जहां पर ॥
और डाकखाने खोल दिये जहां तहां पर ।
इसका भी खुल चुका है भेद सारे जहां पर ॥
दौलत समेटने का यह ज़रिया किया खड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ ७ ॥

हम पर किसी तरह की मुसीबत जो आपड़ी।
मतलब से कर खुशामदें इनकी बड़ी बड़ी॥
बातों में आ इन्होंने भी आफत सही कड़ी।
पर टाल दी जो आई थी हम पर बुरी घड़ी॥
फिर भी किया सलूक था हमने बहुत कड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ ८॥

सैकड़ों तरह के हमने वायदे किये।
पत्थर की लीक समझ के तसलीम कर लिये॥
जहां तक बलाई होने न पूरे कभी दिये।
गर बोला कोई इनपै तनिक ध्यान दीजिये॥
बस उसकी बात हमने हंसी में ही दी उड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ ९॥

बद क़िस्मती से जर्मनी का युद्ध छिड़ गया।
और इस तरफ़ हमारा सितारा भी गिर गया॥
अपने उरूज का था ज़माना निकल गया।
समझा कि है संसार ही हमसे बदल गया॥
जर्मन बुरी तरह से था जी तोड़ कर लड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ १०॥

हिन्दोस्तानियों को तो नामर्द किया था।
हथियार इनको बांधने हमने न दिया था॥
थोड़ी सी फौज को वहां पर भेज दिया था।
जाते ही दुश्मनों को हटा पीछे दिया था॥
तोपों के सामने इन्होंने छाती दी अड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ ११॥

यह देख कर संसार चकित होगया सारा ।
जिस ढब से बहाई इन्होंने खून की धारा ॥
रुपया व आदमी का हमें देके सहारा ।
था रख लिया दुनिया में निशां बाक़ी हमारा ॥
पर किया था हिन्द ने अहसान ये बड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ १२ ॥

देखा कि जर्मनी को इन्होंने हरा दिया ।
अहसान जतायेंगे ये दिल में समझ लिया ॥
मांगेंगे हक़ हमने जो था वायदा किया ।
यह सोच हमने इन को था रौलट का बिल दिया ॥
तक़दीर से हमारी था उल्टा असर पड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ १३ ॥

उस दिन से हिन्दवालों की हालत बदल गई ।
इनके दिलों से अपनी मुहब्बत निकल गई ॥
इज़्ज़त जो मुल्क में थी वो मिट्टी में मिल गई ।
और मीठी चुपड़ी बातों की क़लई भी खुल गई ॥
करतूत ने हमारी जमा रंग दिया उड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ १४ ॥

उस वक्त गांधी जी ने था फिर भी चिताया ।
और देशभर के लीडरों ने शोर मचाया ॥
समझा के ऊंच नीच बहुत रस्ता दिखाया ।
अभिमान के सबब नहीं कुछ ध्यान में आया ॥
सोचा कि दिखा खौफ इन से पीछा लें छुड़ा ।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा ॥ १५ ॥

अप्रिल सन् १९ में पूरा ग़ज़ब ढाया।
पंजाब जिसने हमको था आफ़त से बचाया॥
सब से ज़ियादा जिसने था खूं अपना बहाया।
उसके ही ज़नों मर्द का कर दिया सफ़ाया॥
बन्दूक बम गोलों से उनको दिया उड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ १६

नेकी के बदले हमने बदी कर के दिखादी।
बेक़सूर रिआया हमने मार गिरादी॥
ऐसी ऐसी हमने उन्हें सख्त सज़ादी।
वहशी पने की अपने करके हद दिखादी॥
हमने तो इनके साथ में छोड़ा न कुछ जुड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ १७॥

उस दिन से हिन्द वाले हैं ऐसे बदल गये।
हिन्दु मुसल्मां एक हो आपस में मिल गये॥
आपस के भेद भाव भी सारे निकल गये।
हमतो दबाना चाहते उलटे उछल गये॥
गांधी ने असहयोग का झंडा किया खड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ १८॥

सुनते थे बदलता है ज़माने का तौर जब।
जाता है बदल दुनिया का रंग और ढंग सब॥
लेकिन हम ऐसी बातों का करते थे ख्याल कब।
आती हैं याद पिछले ज़माने की बातें अब॥
अफ़सोस अबतो हमसे ही पाला है आ पड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ १९॥

हिन्दोस्तानी डरते थे अंगरेजी तोप से।
ऐसे कि नहीं डरते थे ईश्वर के कोप से॥
हर दम ही कांपा करते थे हमारे खौफ से।
लेकिन वे अब न डरते हैं बन्दूक तोप से॥
...ने मुकाबिले पै ये सीने को अब अड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ २० ॥

देकर खिताब देते थे धोखे में इन को डाल।
इसही बहाने पैंठते थे खूब इन से माल॥
पर अबतो खुल गई कि थीये सब हमारी चाल।
उनको समझते हैं वे अपनी शामतो वबाल॥
चुटकियों में हमको रहे आज कल उड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ २१ ॥

फौज और पुलिस की नौकरी करना हुई हराम।
जो छोड़ते हैं नौकरी बस वह हैं नेक नाम॥
आखिर तो भारतीय हैं फौज और पुलिस तमाम।
झुकता है घोंटू पेट को इस में नहीं कलाम॥
पूरा वबाल जान को ये होगया खड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ २२ ॥

कपड़े के बाईकाट से पूरा किया इलाज।
इसके ही पीछे मिलता था खाने को हमें नाज॥
तिसपर भी आती दीखे है बस अबतो अपनी लाज।
इस ढब से तो कर देंगे दाने दाने को मुहताज॥
बस बेतहाशा मुंह से ये फ़िक़रा निकल पड़ा।
कि भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥२३॥

रिफ़ार्म ही था मांगता पहले तो हिन्दुस्तान।
लेकिन ग़रूर की वजह से दिया नहीं ध्यान॥
अबतो स्वराज्य को ही वह बस ठान बैठा ठान।
सुन करके सूखी जाती है अबहाय अपनी जान॥
आज़ादी के लिये है हुआ इंडिया खड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ २

जेलों की भी दहशत न किसी को है अब रही।
दिन बदिन है देश की हालत बदल रही॥
बेशक बड़ों का कहना ये बिलकुल ही है सही।
दुनिया में किसी की न सदा एकसी रही॥
तक़दीर को अपनी मैं अब कोसूं पड़ा पड़ा।
भर चुका है अब हमारा पाप का घड़ा॥ २५॥

॥ समाप्त ॥

नोटिस

१—हमारी दूकान से शुद्ध खद्दर के धोती जोड़े मिल सक्ते है।

२—गंधक वटी गोली जो पेट के हर मर्ज को आराम पहुंचाती है हमारे यहां मिल सक्ती हैं एक दफे नमूना जरूर मंगाईये।

३—अलीगढ़ के ताले भी हमारी मारफत मिल सके हैं।

निवेदक—

नवलकिशोर गुप्त मियागंज

अलीगढ़ सिटी।